विषय-सूची

इन्टरनेशनल सूचना फॉरम कैसे प्रारम्भ हुआ, द्वारा विलियम पोर्टर, संस्थापक अध्यक्ष

संस्थापक सदस्यों की टिप्पणियाँ

१९९१ में आयोजित पहले अ.स.फॉ. का निमंत्रण

विश्वव्यापी पहुँच- १९९१ से २००१ तक अ.स.फॉ. की विश्व सूची

पोप जॉन पॉल II अ.स.फॉ. के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का स्वागत करते हुए

फॉरम की सार रिपोर्टें

फॉरम का मुख्य विषय

प्रेस टिप्पणियाँ

मीडिया से सम्बद्ध लोगों की टिप्पणियाँ

डेनवर घोषणा का नगर और देश

अ.स.फॉ. २००० में पारित- साराजेवो प्रतिबद्धता

साराजैवो प्रतिबद्धता का मूल्यांकन

नये अध्यक्ष बरनॉर्ड मारजुरिटे द्वारा वक्तव्य, भविष्य दृष्टि

अ.स.फॉ के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए सूचना और इसका वित्तीय आधार

******

अ.स.फॉ कैसे प्रारंभ हुआ

विलियम पोर्टर द्वारा

इसकी संभावना कम है कि मानव व्यवहार और प्रयोजन की दिशा में किसी एक कारण या एक बात से परिवर्तन आ जाए। परिवर्तन आने के लिए कई ऐसे तत्व है जो इसके लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं। यह परिवर्तन कारकों के परिणामस्वरूप संभव होता है। और यदि परिवर्तन सही दिशा में हो तो इसके लिए आंतरिक प्रेरणा होनी चाहिए।

मेरे मामले में परिवर्तन के दो कारक थे जो निर्णायक सिद्ध हुए, लेकिन साथ ही समाज की स्थिति पर काफी विचार मंथन चल रहा था किस प्रकार मीडिया मेरी दुनिया को प्रभावित करता है। पहली उत्प्रेरक ११ वर्ष पूर्व फाइनेंशियल टाइम्स में प्रकाशित एक रिपोर्ट थी कि संचार उद्योग जिसमें जन संचार शामिल है विश्व का सबसे बड़ा उद्योग बन गया है। इससे प्रेरित हो मुझे यह प्रश्न करना पड़ता है कि क्या हम सर्वाधिक जिम्मेदार वर्ग के रूप में काम कर रहे हैं इसका उत्तर निश्चित रूप से 'ना' में है। और मैंने यह विचार किया कि एक प्रकाशन संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में मीडीया जिम्मेदारी के सवाल पर मेरी अपनी स्थिति क्या है? मैंने अनुभव किया कि मैंने अपने आप से यह सवाल नहीं पूछा, ना ही मेरे साथियों या वरिष्ठ अधिकारियों ने। हमारे उत्पाद का उन लोगों पर जो उसको पढ़ रहे है, सुन रहे हैं या देख रहे हैं, अच्छा या बुरा किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है। यदि हम कुछ ऐसा करते जिसका अच्छा सामाजिक प्रभाव होता तो हम प्रशंसा स्वीकार कर लेते। परन्तु यदि प्रभाव बुरा होता तो हम उससे दूरी रखते और कहते कि यह हमारे विचार का विषय नही है यह तो राजनीतिज्ञों, धार्मिक नेताओं और समाज विज्ञानियों के विचार का विषय है। मुझे सूचना की और प्रकाशन की स्वतंत्रता है किन्तु इसके परिणामों से मेरा कोइ सरोकार नही है। मैने इस पर और विचार किया और पाया कि मीडिया के लोग साबुन या बिस्कुट के निर्माताओं के समकक्ष नहीं है। हमारा उत्पाद लाखों लोगों की जिंदगी, आशाओं और भय को प्रभावित करता है और हमें सामने आकर इसके प्रभावों पर विचार करना चाहिए।

उस समय तक मेरे व्यापार करने का उद्देश्य मात्र धन कमाना और महत्वपूर्ण बनना था। अपनी कंपनी के लिए और अपने स्वयं के लिए। मैं यह नही कहता कि ये आवश्यक रूप से बुरी प्रेरणाएँ हैं परन्तु इनमें जिम्मेदारी का तत्व नहीं है। जिम्मेदारी का आकलन कैसे किया जाए? मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इस सम्बन्ध में सबसे अच्छी मार्गदर्शक मानव की अन्तरआत्मा है, यह उच्च प्रौद्यगिक तत्व हमारे अन्दर वास करता है परन्तु जीवन में समझौतो के कारण वह ढक जाता है। इससे हमें पता चलता है कि क्या गलत है, क्या सही, क्या सच है, क्या झूठ, क्या न्यायपूर्ण है, क्या अन्यायपूर्ण, और किसी स्थिति में क्या नैतिक रास्ता अपनाना चाहिए। मैने यह निर्णय किया कि अब से अन्तरआत्मा की आवाज मानना मेरे व्यावसायिक और व्यक्ति जीवन का आधार रहेगा।

परन्तु कई और भी तत्व हैं जिन पर हमें विचार करना होगा। अभी हमने शीत युद्ध के समाप्त होने पर उत्साह देखा और हममें से बहुतों को ऐसा लगा कि अब लोकतंत्र, स्वतंत्र बाजार और कानून का शासन सब जगह होगा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ और हमने अनुभव किया कि किस प्रकार मानव लिप्सा और महत्वाकांक्षा की बरसात हो रही है। खाड़ी युद्ध और परिणाम सामने हैं। अफ्रीका में और अन्यत्र लाखों लोग भूख से मर रहे हैं। पश्चिम के महान नगरों में हिंसा बढ़ रही है।ऐसा लगता है कि गरीबी और रोजगार की समस्या का कोई समाधान ही नहीं है। इससे भी भयानक तथ्य यह है कि दुनिया में जातीय युद्द छिड़े हैं। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि लगभग एक हजार स्थान हैं जहां जातीय झगड़े वास्तविक या संभावित हैं। यह मेरे बिल्कुल घर पर है, चूंकि मेरी पत्नी युगोस्लाव है जिसकी साराजेवो मां और मांटेनग्रिन पिता हैं, उसका पालन-पोषण सर्बिया में आर्थाडेक्स धर्म में किया गया। बोसानिया की दुखद घटनाएं तो सामने आ ही रही हैं।

इस विश्व परिदृश्य में मीडिया की क्या भूमिका थी?क्या हम किसी और ग्रह से यह बताने आए हैं कि पृथ्वी की सभ्यता नष्ट हो रही है और इसकी समाप्ति पर हम वापस जहां से आए हैं वहीं चले जाएंगे? नहीं, हम इसके हिस्से हैं, हमारे बच्चे, पोते और प्रिय लोग हैं जिनके लिए हम बेहतर विश्व देखना चाहेंगे। इसलिए हम चाहते हैं कि एक स्वतंत्र और न्यायपूर्ण समाज बनाने के लिए और उसमें मीडिया की निर्णायक भूमिका और प्रयोजन तलाश करने के लिए प्रयत्न करने चाहिए।

इस बिंदु पर पहुँच कर मैंने अपनी पत्नी सोनजा से चर्चा की जिसके विचारों के लिए मेरे दिल में बहुत सम्मान है। १७ वर्ष की आयु में जब टीटो अपने देश पर जर्मनी के कब्जे का विरोध कर रहे थे वह उस संबंध में संदेशों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाती थी। वह पकड़ी गई और जर्मन के यातना शिविरों में उसने तीन साल काटे, जिसके अंत में उसे मृत्यु की सजा सुना दी गई थी, पर वह बच निकली। युद्ध के पश्चात उसने बेलग्रेड विश्वविद्यालय में कानून की शिक्षा प्रारंभ की और ८ भाषाओं में निष्णांत हो गयी। जब टीटो का शासन आया तो उस पर दबाव डाला गया कि वह कम्युनिस्ट कार्यकर्ता बन जाए, परन्तु उसने मना कर दिया। सोनजा को संदेहास्पद व्यक्ति घोषित कर दिया गया और उसे 'जन विरोधी' घोषित कर फांसी की सजा सुनायी गयी। उसे एक शिविर में भेजा गया जहाँ सुबह तीन बजे गोली मार कर फांसी की सजा दी जाती थी। उसे नौ रातों तक तैयार कर फांसी वाली पोशाक पहनायी गयी और ऐसा लगता रहा कि सुबह उसे फांसी दे दी जाएगी। दसवें दिन उसे सुबह कमाडेंट के कार्यालय में बुलाकर बताया गया कि हमसे गलती हो गयी है और उसे सड़क पर छोड़ दिया गया। परन्तु मन से तो वह ९ बार मर चुकी थी। परन्तु वह दृढ़ इच्छाशक्ति वाली महिला थीं और उन्होंने जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया बनाए रखा। उसके लाल बालों के अतिरिक्त उसकी यह विशेषताएं थी जिसने मुझे उसके प्रति आकर्षित किया और मैंने वैवाहिक जीवन का प्रारंभ किया। मैंने उसे मीडिया के संबंध में अपनी सोच के बारे मै बताया तो वह ध्यान से सुनती रही और अंत में मेरी आंखों में देखकर कहा कि 'यदि आप इस रूप में सोचते हैं तो इसके बारे मैं कुछ करते क्यों नहीं?' यह दूसरी प्रेरणा थी जिसने मेरे विचारों को व्यवहार में उतारने में सहायता की।

मैंने प्रकाशन, प्रसारण, पत्रकारिता और विज्ञापन के क्षेत्र में उच्च स्तर पर कार्य कर रहे कई मित्रों से बात की और हिचकिचाहट और संकोच के साथ अपने विश्वासों के बारे में बताया। मैंने संकोच के साथ बताया क्योंकि मैं इस बात के प्रति संवेदनशील था कि लोग मेरे बारे मैं क्या सोचते हैं और मैं नहीं चाहता था कि लोग मुझ पर हंसे या मेरी बात की उपेक्षा करें। तथापि मेरे चार मित्रों ने प्रतिक्रिया दी और यह पता चला कि वह भी मीडिया की भूमिका के बारे में पुनर्विचार कर रहे थे और समाज पर पिछले दस से बीस वर्षों में जो बुरे प्रभाव हुए थे उसको लेकर शर्मिंदा थे।

हमने यह निश्चय किया कि मीडिया से जुड़े ऐसे व्यक्तियों का विश्वव्यापी नेटवर्क बनाया जाए जो नैतिक मूल्यों में विश्वास करते हों और उन्हें जीवन में भी लागू करते हों जिससे स्वाभाविक रूप से उनकी कम्पनियों और श्रोताओं पर प्रभाव होगा। हमने इसे अ.स.फॉ कहा क्योंकि इसमें संचार क्षेत्र की सभी शाखाएं पूरी तरह से शामिल हो सकें तथा यह एक ईमानदार प्रयास हो, एक अन्य संस्था खड़ी करने का प्रयास न बन कर रह जाए। यह अंतरात्मा से अंतरात्मा प्रज्ज्वलित करने का प्रयास था।

हमने पहला काम यह किया की फॉरम का गठन काक्स कांफ्रेस सेंटर, स्विजरलैण्ड में किया चूंकि इसकी भौगोलिक स्थिति बहुत सुंदर थी और काक्स आयोजकों ने बड़ी गर्मजोशी के साथ हमारा स्वागत किया।तब से हम विश्व के विभिन्न भागों में २२ सम्मेलन आयोजित कर चुके हैं और ११७ देशों में २००० मीडिया से जुड़े लोगों के साथ संपर्क में हैं। इस रिपोर्ट में इस संबंध में पूरी जानकारी दी गई है।

कई बार मुझसे यह पूछा जाता कि है यदि अ.स.फॉ नहीं होता तो मैं अपना जीवन किस प्रकार बिताता। मैं आम तौर पर कहता हूँ 'गोल्फ या ब्रिज खेलता, नौकायन करता और सुंदर विधवाओं का पीछा करता'। हां, बहुत से सेवानिवृत मित्रों ने ऐसा ही किया है।

१९९१ में विश्व में ऐसे दस हजार लोग रहे होंगे जिनके पास समकक्ष अनुभव था, समकक्ष बुद्धिमता थी और मेरे जैसा ही आत्मविश्वास था, फिर मैं ही क्यों ? मैं इस बात का तो उत्तर नहीं जानता परंतु इतना अवश्य जानता हूँ कि जब मैंने इस रास्ते पर चलना शुरू किया तो अंदर से एक नैतिक दबाव था जो मेरे साथ निरंतर रहा। यह नैतिक दबाव या प्रेरणा कहां से आती है और मैं जोर देकर कहना चाहूँगा कि यह ईश्वरीय प्रेरणा के अतिरिक्त कुछ नहीं।

मुझे अब दिखावटी व्यक्ति कहा जाता है और मैं आसानी से जीवित ईश्वर की संकल्पना स्वीकार नहीं करता हूँ परंतु हर सुबह जब मैं विश्व मैं सकारात्मक शक्तियों के साथ चलने का संकल्प लेता हूँ तो मैं इस बात से इंकार नहीं कर सकता हूँ कि मेरा प्रयोजन और मेरी प्रतिबद्धता बनाए रखने में कोई शक्ति काम कर रही है। यह उन सब शारिरिक बाधाओं के बावजूद है कि चार बार मेरा बाईपास हुआ, एड़ी की नस टूट गयी, साईनस का प्रकोप रहा कुल्हे का जोड़ कृत्रिम है, और लंदन के एक निजी हस्पताल में मुझे दोहरा बैक्टेरिया इनफेक्शन हो गया। इन बाधाओं को तो पार करना था ये सड़क का अंत नहीं था। मेरा उत्साह बना रहा मुझे नहीं पता कि मेरे माध्यम से कुछ हासिल हुआ

कि नहीं और अ.स.फॉ के लिए काम करने वालों में से मैं एक हूँ इसका श्रेय उस आंतरिक प्रेरणा को दिया जा सकता है। यह अनुभव उन सभी को हो सकता है जो समाज के भाग्य का निर्माण करने में अपनी नियति ढूंढ रहे हैं, जो औरों के मित्र बनना चाहते हैं, जो नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारना चाहते हैं और जो एक उचित और न्यायपूर्ण समाज बनाने में अपनी शक्ति लगाना चाहते हैं।

पोप जॉन पाल II

अंतर्राष्ट्रीय संचार फॉरम के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष पोप जॉन पाल II से भेंट करते हुए।

रोम, २५ मई, १९९९

पोप जॉन पाल ने अपने व्यक्तिगत कार्यालय में विलियम पोर्टर, अध्यक्ष और बर्नाड मारजुरेटी, उपाध्यक्ष अंतर्राष्ट्रीय संचार फोरम को बीस मिनट मुलाकात का समय दिया। संस्था के पदाधिकारियों ने उन्हें मीडिया से जुड़े मुद्दों और फोरम के विचार और कार्यों के बारे में बताया। पोप ने श्री मारजुरेटी के विचार धाराप्रवाह पोलिश में सुने। बीच-बीच में वे सहमति में सर हिलाते रहे और साथ ही उत्साहजनक टिप्पणियां भी दी।

विलियम पोर्टर और बर्नाड मारजुरेटी विशेष रूप से विश्व संचार दिवस (१६ मई,१९९९) के अवसर पर पोप द्वारा दिए गए संदेश के प्रति प्रशंसापूर्ण भाव रखते थे जिसमें जीवन में सत्य खोजने, मानवीय गरिमा की प्रतिष्ठा स्थापित करने और स्वतंत्रता और पारस्परिक निर्भरता के संबंध में मीडिया की विशेष भूमिका का उल्लेख किया।

अपने संदेश में पोप ने कहा कि नई सहस्त्राब्दी में मीडिया महान आशा के साथ काम करे और वह ' लोगों के दोस्त के रूप में अधिक से अधिक अपने को स्थापित करे। उन्हें ऐसी सूचनाएं प्रदान करें जो बुद्धिमता से जुड़ी हों और ऐसा मनोरंजन प्रदान करें जिसमें आनंद हो'।

पोप के समक्ष फॉरम की नैतिक और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता दोहरायी गई और फोरम का इस संकटपूर्ण और असंतुष्टि के युग में मीडिया द्वारा रचनात्मक प्रयोजन देने का संकल्प दोहराया गया।मुलाकात के पश्चात जान पाल II ने दोनों आगंतुकों से गर्मजोशी से हाथ मिलाया और कहा 'मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं'।

भविष्य की दृष्टि

बरनार्ड मारजुरेटि

जब जुलाई २००१ में मैने अ.स.फॉ के अध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी स्वीकार की (ईश्वर को धन्यवाद कि विलियम पोर्टर, संस्थापक अध्यक्ष अभी भी हमारे साथ हैं), तो उसका मुख्य कारण मेरा यह विश्वास था कि जो कार्य १० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ है वह जारी रहना चाहिए।इतने सारे सदाशयी लोग इस कार्य के साथ पिछले १० वर्षो से जूड़े हैं, विशेष रूप से कैरोलिन और ह्यूज नॉवेल और जीन जैकिस ऑडियर जिनकी प्रतिभा, कर्मठता और प्रतिबद्धता ने अ.स.फॉ को सम्भव वनाया। पिछले १० वर्षो में अत्यधिक उपलब्धियाँ हुई है। अ.स.फॉ ने विश्व के विभिन्न हिस्सों में २२ से ज्यादा सम्मेलन आयोजित किये हैं। सारजेवो प्रतिवद्धता का अनुवाद किया गया और विभिन्न देशों में इसे प्रशंसा प्राप्त हुई। २१ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में यह मीडिया की मैगना कारटा बन गई।

आखिर हम चाहते क्या हैं? हम सबसे पहले तो यही चाहते हैं कि मीडिया लोगों के मष्तिष्क दूषित न करे, विशेष कर युवा लोगों के। दूसरे, नागरिकों की विनम्रता और ईमानदारी के साथ सेवा करें और उन्हें पूर्वाग्रह मुक्त, ईमानदार और संतुलित सूचना प्रदान करे जिससे कि वह जान सके कि उनके आसपास विश्व में क्या घटित हो रहा है और उसके आधार पर अपनी धारणाएँ बना सकें। तभी और केवल उसी स्थिति में लोकतंत्र कार्य कर सकेगा। तीसरे, हम यह चाहते हैं कि मीडिया विश्व में की जाने वाली सभी सकारात्मक पहलुओं, जो कि मानवीय गरिमा को प्रतिष्ठा दिलाने और सामाजिक न्याय को प्राप्त करने के लिए किए जा रहे है, का समर्थन करे। इस प्रकार हम मानवीय गरिमा का सम्मान करने वाली सभ्यता के निर्माण में सहयोग की आशा करते हैं।

इन लक्ष्यों को हम किस के सहयोग से प्राप्त करने की आशा करते हैं? स्वाभाविक रूप से मीडिया में काम करने वाले व्यावसायिकों के सहयोग से जो अधिकाधिक मात्रा में अ.स.फॉ की ओर आकर्षित हो रहे हैं, और अपनी जिम्मेदारी और समाज और लोकतंत्र के भविष्य के प्रति जागरूकता दिखा रहे हैं। साथ ही जनता के सहयोग से , जो स्पष्ट कर चुकी है कि उसके साथ सम्मान और सद्भाव से व्यवहार किया जाए और जो ईमानदार प्रकाशन और अच्छे कार्यक्रमों के लिए अपनी प्राथमिकता स्पष्ट रूप से परिलक्षित कर रही है। हम मीडिया मालिकों के साथ भी संवाद जारी रखना चाहते हैं, जो कि आज के विश्व में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। वे भी मनुष्य हैं, उनकी भी अंतरात्मा है, वे भी भावी विश्व की चिंता में हमारे सहभागी बन सकते हैं।

हम विश्व के कोने-कोने में सम्मेलनों का आयोजन,सह- आयोजन करते रहेंगे, जहाँ भी हमें लगेगा कि मीडिया के लोग परिवर्तन चाहते हैं। हम किसी पर दबाव नहीं डालेंगे, परंतु एक दुसरे से सीखने की कोशिश करेंगे। हम नई पहलों की भी श्रृंखला शुरू करेंगे। अभी तक अ.स.फॉ का ११६ देशों में प्रतिनिधित्व है हमें मीडिया के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान रखने वाले इस विश्वव्यापी नेटवर्क का सही इस्तेमाल करना होगा। हम उच्च स्तरीय

प्रकाशनों से जुड़े पत्रकारों के बीच में आदान-प्रदान के कार्यक्रमों का आयोजन करेगें। युवा पत्रकारों के लिए 'सोनजा पोर्टर सम्मान' स्थापित करेगें जो अपने काम में अ.स.फॉ के सिद्धातों के प्रति प्रतिबद्धता प्रकट करेंगे। हम यू. के. स्थित मीडिया रिसर्च सेंटर के सहयोग से और विश्व के विभिन्न भागों में स्थित स्थानीय प्रतिनिधियों के सहयोग और व्याख्या द्वारा मीडिया की स्थिति और मीडिया और जनता में सम्बन्ध पर सर्वेक्षण करेगे। इन सर्वेक्षणों से प्राप्त जानकारी हमारे मीडिया के विकास में अत्यधिक सहायता करेगी।

विभिन्न देशों और महाद्वीपों के पत्रकारों और मीडिया व्यावसायिको में से चुनकर उच्च स्तरीय अध्यापकों की टीम के निर्माण का काम शुरू हो गया है। और जहाँ भी आवश्यक हो, सेवा सम्बन्धी कार्यशालाएँ और पत्रकारों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध कराई जाएगी। अब हमारी पहले से बेहतर बेब-साइट उपलब्ध है चूँकि मीडिया पर विश्वव्यापी सूचना का स्त्रोत बन गई है। इस सम्बन्ध में और भी पहल की जाएगी।

इस का अर्थ यह हुआ कि अ.स.फॉ को अच्छे बिना भारी बजट के अब चलाया नही जा सकता। पहले दस वर्षो के दौरान हम प्रत्येक सम्मेलन से पहले धन राशि प्राप्त करने के लिए प्रयास करते और आशा करते कि कौई फाउन्डेशन या संस्थान सहायता करेगा। भाग्य और संयोग से ऐसा होता रहा और हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते रहे। परन्तु यह देखते हुए कि अब हमें विविध प्रकार की गतिविधियों को प्रारम्भ करना है (यद्दपि अभी भी हमें भाग्य का सहारा चाहिए होगा) हमें और अधिक व्यवस्थित और वित्तिय रूप से सुदृढ़ होने की आवश्यकता है इसलिए इस दशक की शुरूआत से हम एक व्यापक धन संग्रह का काम प्रारम्भ करेगे जिसका उद्देश्य फाउन्डेशनों, अन्तराष्ट्रीय संगठनों और मीडिया कम्पनियों से नियमित आधार पर सहयोग प्राप्त करना है।

हमारे विचार से अ.स.फॉ के विकास में नये चरण की शुरूआत के लिए यह उचित समय है। यह उत्साहजनक है परन्तु इसमें खतरे भी निहित हैं। हम यह नही चाहते कि अ.स.फॉ एक विशाल अफसरशाह तंत्र वन जाए। जबतक मैं अध्यक्ष रहुँगा तब तक निश्चित रूप से ऐसा नहीं होगा और अ.स.फॉ अपने संस्थापकों की भावना के प्रति प्रतिबद्ध रहेगा। मीडिया में बेहतरी के हमारे प्रयास व्यक्ति से व्यक्ति, और अन्तरात्मा से अन्तरात्मा स्तर पर पहले की तरह चलते रहेंगे। आप इस सम्बन्ध में निश्चिंत हो सकते हैं।

विकास के इस चरण पर अ.स.फॉ की सफलता केवल इस बात पर निर्भर नही करेगी कि इसके अध्यक्ष और संस्थापक अध्यक्ष क्या करते हैं। हम अपने प्रयासों में समन्वय सुनिश्चित करने के लिए प्रयास जारी रखेंगे, परन्तु इस कार्य को अधिक से अधिक विकेन्द्रित करना है। हम तभी सफल होंगे यदि मीडिया हमारे सामान्य कार्यो में अधिक से अधिक रूचि ले। अ.स.फॉ उन सब लोगों के लिए है जो इस प्रकल्प में जुड़े हैं।

प्रत्येक के लिए एक भूमिका है, पहल के लिए एक प्रस्ताव है, एक गतिविधि है जिसका दायित्व वो ले सकते हैं। हमारी एक ठोस कार्यकारी समिति है, प्रभावी उपाध्यक्ष और क्षेत्रिय समिति हैं जिनकी भूमिका पहले से गुरूतर है। परन्तु यह पर्याप्त नही है। मैं

प्रत्येक से अनुरोध करता हुँ कि वह उद्देश्यों के प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध हो।

हमारे पास अपने सिद्धांतों के संबंध में एक अत्यंत महत्वपूर्ण वक्तव्य है: साराजेवो प्रतिबद्धता। हममें से प्रत्येक को यह विचार करना चाहिए कि वह वह किस प्रकार उन सिद्धातों को अपने कार्यों और जीवन में उतार सकता है। हमें विनम्र रूप से और पुरे उत्साह के साथ एक उदाहरण बनना चाहिए, शब्दों द्वारा नहीं, कार्यों द्वारा। हम बार-बार असफल हो सकते हैं। परन्तु हमें औरों को प्रकाश दिखाना होगा, चाहे यह अस्पष्ट और अनिश्चित हो। यदि हम नहीं तो यह कार्य कौन करेगा? यदि अब नहीं तो यह कार्य कब किया जाएगा?

एक तथ्य मैं आपको बताना चाहता हूँ यदि अ.स.फॉ असफल होता है, जो कि हम सोच भी नहीं सकते, तो उसका जिम्मेदार मैं बनूंगा,परन्तु यदि यह सफल होता है तो यह पूर्ण रूप से उन सभी की सफलता होगी जो इस अ.स.फॉ के कार्य में भागीदार बन रहे हैं। यह आप सभी लोग हैं जो कि अ.स.फॉ हैं। हम सब से ही मिलकर ही अ.स.फॉ बना है।